Name of Research Scholar : **Gagan Bakolia**
Name of Supervisor : Prof. Mahendra Pal Sharma
Department : Hindi , Jamia Millia Islamia
Title of the thesis : Pravasi Jeevan ki samasya ke sandarbh mein Usha Priyamvada ke katha-sahitya ka adhyayan

ABSTRACT

मानव नैसर्गिक रूप से स्वतंत्र जन्म लेता है। उसकी यह प्रवृत्ति रही है कि जिस स्थान पर जीवन जटिल होता है, वह उस स्थान को छोड़कर ऐसे स्थान की ओर स्थानान्तरण करता है, जहाँ जीवन तुलनात्मक रूप से सुगम होता है। यह स्थानान्तरण ही प्रवास कहलाता है। प्राचीन काल से भारतीय विभिन्न कारणों से प्रवास कर रहे है, प्राकृतिक आपदाएँ, जलवायु परिवर्तन महामारियाँ, गरीबी, सूखा, अकाल, बेरोजगारी, धार्मिक उन्माद और शिक्षा आदि प्रमुख कारण हैं।

हिन्दी कथा–साहित्य में उषा प्रियंवदा एक महत्त्वपूर्ण नाम है। उन्होंने प्रवासी जीवन की समस्याओं को प्रवासी भारतीयों के अलावा मध्यवर्गीय नौकरी पेशा व्यक्तियों के स्थानान्तरण के दर्द से जोड़कर भी देखा है। विदेशों की चकाचौंध व सुविधाजनक जीवन भारतीयों को अपनी ओर आकर्षित करता है परन्तु विदेशों में इन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। प्रवासी पात्रों की त्रासदी एवं विडम्बनाएँ उषा प्रियंवदा के कथा–साहित्य में अभिव्यक्ति हुई है। विदेश में परिवेशगत भिन्नता के कारण भारतीयों को सामंजस्य की समस्या का सामना करना पड़ता है। साथ ही, रंगभेद और नस्लभेद टिप्पणियाँ भी उनका जीना दुर्भर कर देती है। विदेशियों द्वारा दूसरे दर्जे के नागरिकों जैसा बर्ताव प्रवासियों को स्वदेश लौटने के लिए मजबूर करता है। ऐसी स्थिति में वह धीरे–धीरे भावुक मानसिकता की तरफ अग्रसर होता है। वह अपनी वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट होकर अतीत के बारे सोचता रहता है। उसकी यह मानसिकता धीरे–धीरे नॉस्टेल्जिया में परिवर्तित हो जाती है।

उषा प्रियंवदा अपनी रचनाओं में पात्रों के द्वारा ऐसे अवास्तविक संसार की रचना करती है, जिसमें नॉस्टेल्जिया, आत्मकेन्द्रियता और अलगाव के स्वर एक–दूसरे अतिक्रमण करते है, एक–दूसरे में घुलते–मिलते रहते हैं। ऐसी जिन्दगी के कारण अकेलेपन, उखड़ापन, अजनबीपन, ऊब और अपने परिवेश से कट जाने का दर्द, प्रवासी को वर्तमान, सुविधाभोगी समाज से पूर्णतः जुड़ने नहीं देता। विदेशी वातावरण भारतीयों के लिए एक अलग मानवीय अनुभव है, जो उसकी चेतना पर बाहरी और भीतरी दबाव डालता है, जिससे वह दो सभ्यताओं के सांस्कृतिक मूल्यों के बीच फंस जाता है। ऐसी स्थिति में उसे अपनी संस्कृति और अस्तित्व पर संकट महसूस होने लगता है। उषा प्रियंवदा सांस्कृतिक संकट के साथ–साथ राष्ट्रीय

संकट के भयावह चित्र प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से बताया है कि कैसे भारतीय युवा एक बार विदेशी भूमि पर पहुँचने के बाद वे अपनी पुरखों की जमीन पर लौटना नहीं चाहते।

प्रवासी भारतीय विदेशों में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूल विदेशी संस्कृति के रंगों में ही रंग जाते हैं, ऐसी स्थिति में उनके समक्ष अस्मिता का संकट उपस्थित हो जाता है। प्रवास में विदेशी परिवेश के अनुरूप उनके सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक, पाप–पुण्य, मूल्य और वर्जनाओं के अर्थ बदल जाते हैं। प्रवास में उनके लिए केवल दो चीजे ही महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। एक, अर्थ और दूसरा यौन–तृप्ति। इन दोनों चीजों के पीछे वे अपना सब कुछ छोड़ने को भी तैयार हो जाते हैं लेकिन अन्त में उन्हें अकेलेपन, उदासी और भटकन के सिवाय कुछ नहीं मिलता।

उषा प्रियंवदा ने अपने साहित्य के माध्यम से अमेरिका में जीवनयापन कर रहे, प्रवासियों के जीवन की रिक्तता, एकरसता, शून्यता, नीरसता, उदासीनता, अकेलेपन तथा अजनबीपन को बड़ी करूणा व स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त किया है। आज सबसे बडी त्रासदी यह है कि व्यक्ति भीड़ में भी अकेला होता जा रहा है। मनुष्य सिमट रहा है। प्रवास में वह जीवन–पोषक मानवीय मूल्यों से निरन्तर कटता जा रहा है। इस कटते जाने की प्रक्रिया से उत्पन्न छटपटाहट को उषा प्रियंवदा ने प्रवासी जीवन व्यतीत करते हुए अपने अनुभव की कसौटी पर देख–परख कर अभिव्यक्ति किया है। उषा प्रियंवदा ने भौतिकवादी समाज की परिणतियों को प्रस्तुत किया है। जिस प्रकार व्यक्ति की स्वतंत्रता व्यक्ति को पूरे समाज में काटकर अलग कर देती है उसी प्रकार भौतिकतावादी संस्कृति भी मनुष्य को उसके मूल्यों और संस्कारों से काट कर उससे शान्तिपूर्ण जीन जीने का हक छीन लेती है। इस प्रकार प्रवास में न चाहते हुए भी वे द्वंद्वात्मक जीवन जीने के लिए विवश हो जाते है और चाहकर भी अपनी जड़ों में लौट नहीं पाते।